

दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ

विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के लिए जारी संघर्ष: प्रोटेस्टेंटवाद में धर्मत्याग का एक ऐतिहासिक विश्लेषण

Jeff Pippenger

2024-02-29

1888 के विद्रोह में एल्डर जोन्स और वैगनर द्वारा लाया गया संदेश वास्तव में विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने का संदेश था। अपधर्मी प्रोटेस्टेंटवाद यह तर्क देता है कि क्रूस पर मसीह की मृत्यु से प्रदान किया गया धर्मी ठहराया जाना मनुष्य को उसके पापों में ढक देता है, पर उसका लहू वास्तव में उसके पापों को दूर नहीं करता। यह मिथ्या सिद्धांत पापों के हटाए जाने को दूसरे आगमन तक टाल देता है, जब पापियों को तब जादुई रूप से रूपांतरित कर दिया जाता है। अपधर्मी प्रोटेस्टेंटवाद और 1957 से आधिकारिक रूप से, लाओदिकियाई एडवेंटिज़्म, यह दावा करते हैं कि मसीह केवल हमारे स्थानापन्न हैं, पर हमारे आदर्श नहीं। 1888 से एक वर्ष पहले, बहन व्हाइट ने निम्नलिखित लिखा।

'मैं तुम्हें नया हृदय दूँगा और तुम्हारे भीतर नई आत्मा स्थापित करूँगा।' मैं पूरे हृदय से मानता हूँ कि परमेश्वर की आत्मा संसार से हटाई जा रही है, और जिन्हें महान प्रकाश और अवसर मिले हैं पर जिन्होंने उनका लाभ नहीं उठाया, वे सबसे पहले छोड़ दिए जाएँगे। उन्होंने परमेश्वर की आत्मा को दुखी करके दूर कर दिया है। हृदयों पर, और कलीसियाओं व राष्ट्रों पर काम करने में शैतान की वर्तमान सक्रियता भविष्यवाणी के हर विद्यार्थी को चौंका देनी चाहिए। अंत निकट है। हमारी कलीसियाएँ उठ खड़ी हों। परमेश्वर की परिवर्तनकारी शक्ति का अनुभव प्रत्येक सदस्य के हृदय में हो, और तब हम परमेश्वर की आत्मा की गहन क्रियाशीलता को देखेंगे। केवल पापों की क्षमा ही यीशु की मृत्यु का एकमात्र परिणाम नहीं है। उन्होंने वह असीम बलिदान केवल इसलिए नहीं दिया कि पाप हटाया जाए, वरन् इसलिए भी कि मानवीय स्वभाव को बहाल किया जाए, पुनः सुशोभित किया जाए, उसके खंडहरों से पुनर्निर्मित किया जाए, और उसे परमेश्वर की उपस्थिति के योग्य बनाया जाए....

मसीह वही सीढ़ी हैं जिसे याकूब ने देखा था, जिसका आधार पृथ्वी पर टिका था और जिसका सबसे ऊपरी पायदान सर्वोच्च स्वर्ग तक पहुँचता था। यह उद्धार की ठहराई हुई रीति को दिखाता है। हमें इस सीढ़ी के पायदान पर पायदान चढ़ना है। यदि हम में से कोई अन्ततः उद्धार पाएगा, तो वह यीशु से वैसे ही चिपके रहने से होगा जैसे कोई सीढ़ी के पायदानों को पकड़कर चढ़ता है। मसीह विश्वास करनेवाले के लिए बुद्धि और धर्म, पवित्रीकरण और छुड़ौती ठहराए गए हैं....

कुछ भयानक गिरावटें उन पर आएँगी जो यह सोचते हैं कि वे दृढ़ खड़े हैं क्योंकि उनके पास सत्य है; परन्तु उनके पास वह वैसा नहीं है जैसा वह यीशु में है। एक क्षण की असावधानी किसी आत्मा को अप्रत्यावर्तनीय विनाश में धकेल सकती है। एक पाप दूसरे की ओर ले जाता है, और दूसरा तीसरे का मार्ग तैयार करता है, और यह क्रम चलता रहता है। हमें, परमेश्वर के विश्वासयोग्य दूतों के रूप में, निरंतर उससे यह विनती करनी चाहिए कि वह अपनी शक्ति से हमें सुरक्षित रखे। यदि हम कर्तव्य से एक इंच भी डगमगाते हैं, तो हम ऐसे पाप के मार्ग पर चल पड़ने के खतरे में हैं जो अंततः विनाश में समाप्त होता है। हममें से प्रत्येक के लिए आशा है, पर केवल एक ही मार्ग से: मसीह से अपने आप को बाँधकर, और उसके चरित्र की सिद्धता को प्राप्त करने के लिए अपनी हर शक्ति लगाकर।

यह मिठास भरा धर्म, जो पाप को हल्के में लेता है और जो सदा पापी के प्रति परमेश्वर के प्रेम पर ही रमा रहता है, पापी को यह मानने के लिए प्रोत्साहित करता है कि परमेश्वर उसे बचा लेगा, जबकि वह पाप में बना रहता है और जानता भी है कि वह पाप है। यही तरीका बहुत-से वे लोग अपनाए हुए हैं जो वर्तमान सत्य में विश्वास करने का दावा करते हैं। सत्य को उनके जीवन से अलग रखा गया है, और यही कारण है कि उसमें अब आत्मा को दोषी ठहराने और परिवर्तित करने की शक्ति नहीं रही। संसार, उसके रीति-रिवाजों, उसकी प्रथाओं और उसके फैशनों

को छोड़ने के लिए हर नस, आत्मा और मांसपेशी को तान देना होगा....

"यदि आप पाप का त्याग करें और जीवित विश्वास का प्रयोग करें, तो स्वर्गीय आशीर्षों की संपदा आपकी होगी।" चयनित संदेश, पुस्तक 3, 155.

धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद का झूठा "goody-goody" धर्म 1957 में एडवेंटिज़्म की चौथी पीढ़ी की शुरुआत में एक आधिकारिक सिद्धांत के रूप में स्थापित किया गया। इसने धर्मी ठहराए जाने की ऐसी परिभाषा प्रस्तुत की जो "पापी को यह विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित करती है कि वह पाप में बने रहने पर भी परमेश्वर उसे बचा लेगा।" क्रूस सिखाता है कि "पापों की क्षमा यीशु की मृत्यु का एकमात्र परिणाम नहीं है," क्योंकि "उन्होंने अनन्त बलिदान केवल इसलिये नहीं दिया कि पाप दूर किया जा सके, बल्कि इसलिये भी कि मानवीय स्वभाव को पुनर्स्थापित किया जाए, पुनः सुशोभित किया जाए, उसके खंडहरों से पुनर्निर्मित किया जाए, और उसे परमेश्वर की उपस्थिति के योग्य बनाया जाए।"

1957 का विद्रोह यह दर्शाता है कि विद्रोह का वह बीज, जो 1863 में बोया गया था और 1888 में अंकुरित हुआ था, और जिसे बाद में 1919 में प्रकाशित पुस्तक (The Doctrine of Christ) द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए नकली संदेश से सींचा गया, अंततः इस स्पष्ट घोषणा के रूप में फलित हुआ कि हबक्कूक की दो पट्टिकाओं द्वारा दर्शाई गई मूल "धर्मियों का विश्वास" अब हटा दी गई थी और उसके स्थान पर धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद में विद्यमान "विश्वास से धर्मी ठहराया जाना" की भ्रष्ट परिभाषा रख दी गई थी। यहूदा का आज्ञा-उल्लंघन करने वाला नबी ठट्टा करने वालों की सभा में लौट आया था और बेतेल के झूठे नबी के साथ भोजन किया था।

लाओदीकिया की कलीसिया के लिए जो संदेश पहले 1856 में मिलराइट्स के आंदोलन को प्रस्तुत किया गया था, और फिर 1888 में पुनः लाओदीकिया की कलीसिया को, उसे हर कदम पर अस्वीकार कर दिया गया। जोन्स और वैगनर का वह संदेश, जो सिस्टर व्हाइट के अनुसार लाओदीकिया के लिए संदेश भी था और विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने का संदेश भी, उसे इस आधार पर ठुकरा दिया गया कि जो विद्रोही उसे अस्वीकार कर रहे थे, वे वास्तव में पुराने सीमाचिह्नों का बचाव कर रहे थे! वे सीमाचिह्न जिनका वे बचाव कर रहे थे, उनकी अपनी मानवीय रचना की एक नींव ही थे, जो रेत पर बनी थी।

1888 में जोन्स और वैगनर द्वारा प्रस्तुत "विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने" के संदेश में सच्चे सुसमाचार का यह तथ्य शामिल था कि जो धर्मी ठहराए जाते हैं, वे पवित्रीकृत भी किए जाते हैं। इसमें यह जोर दिया गया कि धर्मी ठहराया जाना "वास्तव में" पवित्र बनाया जाना है, न कि केवल कानूनी रूप से "पवित्र" घोषित किया जाना। जोन्स और वैगनर का यह संदेश, जिसके बारे में सिस्टर वाइट ने कहा कि वह इसे 1888 के विद्रोह से कई वर्ष पहले से प्रस्तुत करती आ रही थीं, यह बताता है कि जब धर्मी ठहराया जाना आरोपित किया जाता है, तो पवित्रीकरण एक ही समय पर प्रदान किया जाता है।

यह अन्यथा नहीं हो सकता, क्योंकि धर्मसिद्धि और पवित्रीकरण दोनों ही विश्वासी के भीतर पवित्र आत्मा की उपस्थिति से सम्पन्न होते हैं। धर्मसिद्धि और पवित्रीकरण वस्तुतः दो शब्द हैं जो एक ही कार्य के दो पहलुओं का वर्णन करते हैं, वह कार्य जो पवित्र आत्मा की उपस्थिति से विश्वासी के भीतर सम्पन्न होता है।

वही संदेश जो मूसा का था, जिसे कोरह के विद्रोहियों ने अस्वीकार किया, वही 1856 में फिर अस्वीकार किया गया, फिर 1888 में, और फिर 1957 में उसे लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म के उद्धार-धर्मशास्त्र के रूप में सार्वजनिक रूप से प्रतिष्ठित कर दिया गया। निरंतर विद्रोह ने परमेश्वर को क्लान्त कर दिया, क्योंकि लोगों ने कहा, "जो कोई बुराई करता है, वह प्रभु की दृष्टि में अच्छा है, और वह उनसे प्रसन्न रहता है; या, न्याय का परमेश्वर कहाँ है?"

उन्होंने कहा, "जो पाप कर रहे हैं, वे मसीह के लहू से धर्मी ठहराए जाते हैं, और परमेश्वर उनसे प्रसन्न रहता है, यद्यपि वे पाप करते रहते हैं।" यही वह आध्यात्मिक धोखा है जो लाओदीकिया (न्याय किए गए लोग) को भेजे गए संदेश द्वारा दर्शाया गया है, क्योंकि इस तथ्य के बावजूद कि मसीह लाओदीकियों को "अभागा, दयनीय, कंगाल, अंधा, और

नंगा" ठहराते हैं, वे मानते हैं कि वे "धनी हैं, संपत्ति में बढ़े हुए हैं, और उन्हें किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं।" और उसी दशा में, वे वास्तव में प्रभु के मुंह से उगल दिए जाने की कगार पर हैं।

मिलेराइट इतिहास के वे निष्ठावान जिन्होंने 1844 की पहली निराशा के अनुभव के दौरान दृढ़ता बनाए रखी थी—जैसा कि यिर्मयाह, अध्याय पंद्रह, पद पंद्रह से इक्कीस में, मंदिर के निष्ठावान निर्माताओं के रूप में उनका वर्णन है—जिनसे यह प्रतिज्ञा की गई थी कि यदि वे 'ठट्टा करने वालों की सभा' में वापस न लौटें, तो वे परमेश्वर का 'मुख' बनेंगे—वे फिर भी 'ठट्टा करने वालों की सभा' में लौट गए (जिसका प्रतिनिधित्व बेतएल के झूठे नबी से होता है), और लाओदिकिया के लोग बन गए, परमेश्वर के मुंह से उगल दिए जाने की कगार पर, और उन्हें इसका ज्ञान भी नहीं।

11 सितंबर, 2001 को लाओदीकियन एडवेंटिज़्म की दशा, 11 अगस्त, 1840 को प्रोटेस्टेंटों की दशा का प्रतिरूप थी। वे दोनों इतिहास उस समय के कुतर्की यहूदियों द्वारा पूर्वचित्रित थे, जब मसीह के बपतिस्मा के समय पवित्र आत्मा उतरा। इन तीनों इतिहासों में, पूर्व में चुनी हुई एक प्रजा को छोड़ दिया गया था, और अब भी उसे छोड़े जाने की प्रक्रिया जारी है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के समय का वाचा का दूत, उन लोगों के साथ वाचा में प्रवेश करने वाला था, जिन्हें पतरस ने "चुनी हुई पीढ़ी" कहा।

पर तुम चुना हुआ वंश, राजकीय याजक-वर्ग, पवित्र राष्ट्र और विशिष्ट प्रजा हो, ताकि तुम उसके गुण प्रकट करो जिसने तुम्हें अंधकार से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है; तुम जो पहले कोई प्रजा न थे, पर अब परमेश्वर की प्रजा हो; जिन्हें दया नहीं मिली थी, पर अब दया मिली है। 1 पतरस 2:9, 10.

पतरस अपने समय के नए चुने हुए लोगों की पहचान कर रहे थे, जो तब ईसाई कलीसिया थी। उन्हें "चुनी हुई पीढ़ी" के रूप में चुना गया था, उस समय जब मसीह और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले दोनों ने पूर्व के चुने हुए लोगों को "साँपों की संतान" की पीढ़ी कहा था।

हे साँपों की संतान, तुम जो बुरे हो, अच्छी बातें कैसे बोल सकते हो? क्योंकि हृदय की भरपूरता से ही मुँह बोलता है। मत्ती 12:34.

जो पीढ़ी गुजर चुकी है, वह 'साँपों की औलाद' है, जो शैतान का प्रतीक है—बाइबिल की भविष्यवाणी का वह सरीसृप। जो पीढ़ी गुजर चुकी थी, उसने अपने परीक्षणकाल का प्याला भर दिया था, और चार पीढ़ियों के दौरान वे साँप के चरित्र में ढल गए थे। उनका माथा वेश्या का-सा हो गया था। इसी कारण यहजेकेल के अध्याय आठ में बताया गए पच्चीस प्राचीन पुरुष सूर्य के आगे झुकने को तैयार हैं। उन्होंने पोपतंत्र का चरित्र धारण कर लिया था।

तीसरे स्वर्गदूत का संदेश संसार में भेजा गया है, लोगों को चेतावनी देते हुए कि वे अपने माथों पर या अपने हाथों में पशु का चिन्ह या उसकी प्रतिमा का चिन्ह न लें। इस चिन्ह को ग्रहण करने का अर्थ है वही निर्णय करना जैसा पशु ने किया है, और उन्हीं विचारों का समर्थन करना, जो परमेश्वर के वचन के सीधे विरोध में हैं। Review and Herald, 13 जुलाई, 1897.

पशु का चिह्न, पाप के मनुष्य का चिह्न है, जो रोम का पोप और शैतान का पृथ्वी पर प्रतिनिधि है। पशु के समान ही मन रखना, शैतान के समान ही मन रखना है, जिसका प्रतीक एक विषधर साँप है।

"सांसारिक लाभों और सम्मानों को सुरक्षित करने के लिए, कलीसिया को पृथ्वी के बड़े पुरुषों की कृपा और समर्थन प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया गया; और इस प्रकार मसीह को अस्वीकार कर देने के पश्चात्, उसे शैतान के प्रतिनिधि—रोम के बिशप—के प्रति निष्ठा अर्पित करने के लिए उकसाया गया।" The Great Controversy, 50.

पूर्व में चुनी गई प्रजा की अंतिम पीढ़ी में, उनका चरित्र शैतान के चरित्र को प्रतिबिंबित करता है। "चुनी हुई पीढ़ी", जो पूर्व समय में परमेश्वर की प्रजा नहीं थे, उन्हें परीक्षण, परिशोधन और शुद्धिकरण की प्रक्रिया के माध्यम से चुना जाता है। जो इस परीक्षण प्रक्रिया में उत्तीर्ण होते हैं, उन्हें परमेश्वर के साथ वाचा के संबंध में चुना जाता है। प्रभु ने मसीही

कलीसिया के साथ वाचा बाँधी, फिर मिलराइट एडवेंटिज़्म के साथ, और वह ऐसा फिर से एक लाख चवालीस हज़ार के साथ करता है।

जब प्रभु परमेश्वर की नव-चुनी हुई प्रजा के साथ (जो पूर्वकाल में परमेश्वर की प्रजा नहीं थी) वाचा में प्रवेश करता है, तो वह उनके पास वाचा के दूत के रूप में आता है। मलाकी के तीसरे अध्याय की पूर्ति करने वाले तीनों इतिहासों में, एक ऐसा दूत होता है जो वाचा के दूत के लिए मार्ग तैयार करता है। पहला दूत यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था, जो दूसरे और तीसरे दूत का प्रतिरूप था। दूसरा दूत विलियम मिलर था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और विलियम मिलर के भविष्यद्वाणी संबंधी गुण मिलकर उस दूत के गुणों को स्थापित करते हैं जो वाचा के दूत के लिए मार्ग तैयार करता है, ताकि वाचा का दूत आकर एक लाख चवालीस हज़ार के साथ वाचा में प्रवेश करे।

वे तीन दूत, जो वाचा के दूत मसीह के अपने मंदिर में अचानक आने का मार्ग तैयार करते हैं, एक ऐसे कार्य को दर्शाते हैं जो अन्वेषणात्मक न्याय के समय में पूरा होता है और जिसका समापन कार्यकारी न्याय में होता है।

इस पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दिनों में, परमेश्वर की अपनी आज्ञाएँ मानने वाली प्रजा के साथ की वाचा का नवीकरण होगा। "उस दिन मैं उनके लिये मैदान के पशुओं, आकाश के पक्षियों और भूमि पर रंगने वाले जीवों के साथ एक वाचा करूँगा; और मैं पृथ्वी से धनुष, तलवार और युद्ध को समाप्त कर दूँगा, और उन्हें निश्चिन्त होकर चैन से लेटने दूँगा। और मैं तुझे सदा के लिये अपने से ब्याह दूँगा; हाँ, मैं तुझे धर्म और न्याय, और प्रेम-करुणा और दया के साथ अपने से ब्याह दूँगा। मैं तुझे विश्वासयोग्यता में भी अपने से ब्याह दूँगा; और तू प्रभु को जान लेगी।"

'और उस दिन यह होगा कि मैं सुनूँगा, प्रभु कहता है, मैं स्वर्गों को सुनूँगा, और वे पृथ्वी को सुनेंगे; और पृथ्वी अन्न, दाखरस और तेल को सुनेगी; और वे यिज़्जेल को सुनेंगे। और मैं उसे अपने लिए पृथ्वी में बोऊँगा; और मैं उस पर दया करूँगा जिस ने दया नहीं पाई थी; और मैं उनसे कहूँगा जो मेरे लोग न थे, तुम मेरे लोग हो; और वे कहेंगे, तू मेरा परमेश्वर है।' होशे 2:14-23.

'उस दिन, . . . इस्राएल का शेष, और याकूब के घराने में से जो बच निकले हैं, . . . सत्य में इस्राएल के परमपवित्र प्रभु पर भरोसा करेंगे।' यशायाह 10:20। 'हर एक जाति, कुल, भाषा और लोगों' में से ऐसे लोग होंगे जो इस संदेश का सहर्ष उत्तर देंगे, 'परमेश्वर से डरो, और उसकी महिमा करो; क्योंकि उसके न्याय की घड़ी आ पहुँची है।' वे हर उस मूर्ति से मुड़ जाएँगे जो उन्हें इस पृथ्वी से बाँधे रखती है, और 'उसकी आराधना करेंगे जिसने आकाश, पृथ्वी, समुद्र, और जल के सोते बनाए।' वे हर बंधन से अपने आप को मुक्त करेंगे, और संसार के सामने परमेश्वर की दया के स्मारकों के रूप में खड़े होंगे। प्रत्येक ईश्वरीय अपेक्षा के प्रति आज्ञाकारी होकर, वे स्वर्गदूतों और मनुष्यों द्वारा ऐसे जनों के रूप में पहचाने जाएँगे जो 'परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, और यीशु के विश्वास को धारण करते हैं।' प्रकाशितवाक्य 14:6-7, 12।

'देखो, वे दिन आने वाले हैं, यहोवा कहता है, जब हल चलाने वाला फसल काटने वाले को पकड़ लेगा, और अंगूर रौंदने वाला बीज बोने वाले को; और पहाड़ों से मीठा दाखरस टपकेगा, और सब पहाड़ियाँ पिघल जाएँगी। और मैं अपने इस्राएल के लोगों की बंधुआई को फिर से [उलट दूँगा], और वे उजड़े हुए नगरों को बनाएँगे और उनमें बसेंगे; वे दाख की बारियाँ लगाएँगे और उनका दाखरस पीएँगे; वे बाग भी लगाएँगे और उनका फल खाएँगे। और मैं उन्हें उनकी भूमि में रोप दूँगा, और जो भूमि मैंने उन्हें दी है उससे वे फिर कभी उखाड़े नहीं जाएँगे, यहोवा तेरे परमेश्वर की यह वाणी है। आमोस 9:13-15।' रिव्यू एंड हेराल्ड, 26 फरवरी, 1914।

मलाकी का तीसरा अध्याय मसीह के समय में और मिलराइटों के समय में पूरा हुआ, और ये दोनों इतिहास उसकी पूर्ति को अंतिम दिनों में चिन्हित करते हैं। सिस्टर व्हाइट मलाकी के तीसरे अध्याय की पूर्ति को मसीह के मंदिर की शुद्धि के कार्य से सम्बद्ध करती हैं।

जब यीशु ने मंदिर को संसार के खरीदारों और विक्रेताओं से शुद्ध किया, तब उन्होंने यह घोषित किया कि उनका उद्देश्य हृदय को पाप की अशुद्धि से—सांसारिक इच्छाओं, स्वार्थी वासनाओं और बुरी आदतों से, जो आत्मा को

भ्रष्ट करती हैं—शुद्ध करना है। मलाकी 3:1-3 उद्धृत। The Desire of Ages, 161.

मसीह द्वारा मंदिर का शुद्धिकरण पश्चातापी पापी के हृदय को शुद्ध करने के उनके कार्य का प्रतीक था। मनुष्यों के बीच अपनी सेवकाई में, उन्होंने दो बार सांसारिक मंदिर को शुद्ध किया।

“भविष्यद्वक्ता कहता है, ‘मैं ने एक और स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके पास बड़ी सामर्थ्य थी; और पृथ्वी उसकी महिमा से आलोकित हो गई। और उसने बड़े शब्द से बलपूर्वक पुकारकर कहा, बड़ा बाबुल गिर पड़ा, गिर पड़ा, और दुष्टात्माओं का निवास-स्थान बन गया है’ (प्रकाशितवाक्य 18:1, 2)। यह वही संदेश है जो दूसरे स्वर्गदूत द्वारा दिया गया था। बाबुल गिर पड़ा है, ‘क्योंकि उसने अपनी व्यभिचार की प्रचण्डता की दाखमधु सब जातियों को पिलाई है’ (प्रकाशितवाक्य 14:8)। वह दाखमधु क्या है?—उसके मिथ्या सिद्धांत। उसने चौथी आज्ञा के सब्त के स्थान पर संसार को एक झूठा सब्त दिया है, और उस असत्य को भी दोहराया है जो शैतान ने सबसे पहले अदन में हव्वा से कहा था—आत्मा की स्वाभाविक अमरता। ऐसे ही अनेक समजातीय भ्रमों को उसने दूर-दूर तक फैला दिया है, ‘और मनुष्यों की आज्ञाओं को उपदेश करके सिखाते हैं’ (मत्ती 15:9)।”

“जब यीशु ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरम्भ की, तब उन्होंने मन्दिर को उसके धर्मद्रोही अपवित्रीकरण से शुद्ध किया। और उनकी सेवकाई के अंतिम कार्यों में से एक मन्दिर का दूसरा शुद्धीकरण था। इसी प्रकार संसार को चेतावनी देने के अंतिम कार्य में, कलीसियाओं के लिए दो पृथक् पुकारें दी जाती हैं। दूसरे स्वर्गदूत का सन्देश यह है, ‘गिर पड़ा, गिर पड़ा वह बड़ा नगर बाबुल, क्योंकि उसने अपने व्यभिचार के प्रकोप की दाखमधु सब जातियों को पिलाई है’ (प्रकाशितवाक्य 14:8)। और तीसरे स्वर्गदूत के सन्देश के प्रबल पुकार में स्वर्ग से एक शब्द सुनाई देता है, जो कहता है, ‘हे मेरी प्रजा के लोगो, उस में से निकल आओ; ऐसा न हो कि तुम उसके पापों में सहभागी हो, और ऐसा न हो कि उसकी विपत्तियों में से कुछ तुम पर आ पड़े। क्योंकि उसके पाप आकाश तक पहुँच गए हैं, और परमेश्वर ने उसके अधर्म के कामों को स्मरण किया है’ (प्रकाशितवाक्य 18:4, 5)।”

Selected Messages, book 2, 118.

मलाकी के तीसरे अध्याय की पूर्ति में, बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना वह दूत था जिसने यीशु, वाचा के दूत, के लिए मार्ग तैयार किया ताकि वे अपने मंदिर में अचानक आएँ और उसे दो बार शुद्ध करें। अपनी साढ़े तीन वर्षों की सेवकाई में, उन्होंने आरंभ में और अंत में मंदिर को शुद्ध किया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि शुद्धिकरण के कार्य का आरंभ ऐसा है जो अंत का प्रतिनिधित्व करता है। यीशु सदैव प्रारंभ के द्वारा अंत को दर्शाते हैं, और अल्फा और ओमेगा के रूप में अपने कार्य के अनुरूप, उनकी साढ़े तीन वर्षों की सेवकाई मंदिर की शुद्धि से आरंभ हुई और उसी पर समाप्त भी हुई।

साढ़े तीन वर्षों के अंत में, उसने अपना लहू बहाया, जिससे वाचा की पुष्टि हुई और दानिय्येल अध्याय नौ की उस भविष्यवाणी की पूर्ति हुई कि वह एक सप्ताह तक बहुतों के साथ वाचा की पुष्टि करेगा, जिसके मध्य में वह मारा जाएगा।

और बासठ सप्ताह के बाद अभिषिक्त का नाश किया जाएगा, परन्तु अपने लिये नहीं; और आनेवाले प्रधान के लोग नगर और पवित्रस्थान को नष्ट करेंगे; और उसका अन्त बाढ़ के साथ होगा, और युद्ध के अन्त तक उजाड़ ठहराया गया है। और वह बहुतों के साथ एक सप्ताह के लिये वाचा दृढ़ करेगा; और उस सप्ताह के बीच में वह बलि और भेंट को बन्द कर देगा, और घृणित बातों के फैलाव के कारण वह इसे उजाड़ कर देगा, यहाँ तक कि समाप्ति तक; और जो ठहराया गया है वह उस उजाड़े हुए पर उंडेला जाएगा। दानिय्येल 9:26, 27.

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

इन बातों पर पत्रे दर पत्रे लिखे जा सकते हैं। उन्हीं विकृत सिद्धांतों का खमीर पूरे सम्मेलनों में फैला जा रहा है। ‘क्योंकि वहाँ के धनी लोग हिंसा से भरे हुए हैं, और वहाँ के निवासी झूठ बोलते हैं, और उनके मुख में उनकी जीभ छलपूर्ण है।’ प्रभु अपनी कलीसिया को शुद्ध करने का कार्य करेगा। मैं तुमसे सच कहता हूँ, प्रभु उन संस्थाओं में उखाड़-पलट करने ही वाला है जो उसके नाम से जानी जाती हैं।

यह परिष्करण प्रक्रिया ठीक कब आरम्भ होगी, मैं नहीं कह सकता, पर यह अधिक देर तक नहीं टाली जाएगी। जिसके हाथ में सूप है, वह अपने मंदिर को उसकी नैतिक अशुद्धि से शुद्ध करेगा। वह अपने खलिहान को भली-भांति साफ करेगा। परमेश्वर का उन सब से विवाद है जो ज़रा-सा भी अन्याय करते हैं; क्योंकि ऐसा करते हुए वे परमेश्वर के अधिकार को अस्वीकार करते हैं, और प्रायश्चित्त—अर्थात् वह उद्धार जिसे मसीह ने आदम के हर पुत्र और पुत्री के लिए अपने ऊपर लिया है—में अपने भाग को संकट में डालते हैं। क्या परमेश्वर के लिए घृणास्पद मार्ग अपनाना किसी लाभ का है? क्या अपने धूपदानों में पराई आग रखकर उसे परमेश्वर के सामने अर्पित करना, और कहना कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, तुम्हें लाभ देगा?

बैटल क्रीक में इतना अधिक केंद्रीकरण होना परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नहीं रहा है। अब वही स्थिति विद्यमान है जो मुझे चेतावनी के रूप में दिखाई गई थी। इस दृश्य को देखकर मेरा हृदय व्यथित है। प्रभु ने इस नैतिक-पतनकारी स्थिति को रोकने के लिए चेतावनियाँ दीं, पर उनकी अनदेखी की गई। 'तुम पृथ्वी के नमक हो; पर यदि नमक का स्वाद जाता रहे, तो उसे फिर किससे नमकीन किया जाएगा? वह फिर किसी काम का नहीं, केवल बाहर फेंके जाने और लोगों के पांव तले रौंदे जाने के योग्य है।'

मैं अपने भाइयों से आग्रह करता हूँ कि वे जाग जाएँ। यदि शीघ्र ही कोई परिवर्तन नहीं होता, तो मुझे लोगों के सामने तथ्य रखने होंगे; क्योंकि यह स्थिति बदलनी ही चाहिए; ऐसे अत्यंत महत्वपूर्ण और पवित्र कार्य में जो लोग परिवर्तित नहीं हैं, वे अब प्रबंधक और निदेशक नहीं होने चाहिए। दाऊद के साथ हम कहने को विवश हैं, 'हे प्रभु, अब तेरे कार्य करने का समय है; क्योंकि उन्होंने तेरी व्यवस्था को निरस्त कर दिया है।' विशेष साक्ष्य, 30, 31.